CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2026-8.584

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

कौटिल्य का मंडल सिद्धांत : वर्तमान विदेश नीति में इसकी प्रासंगिकता

Rinku Meena
Research Scholar
Political Science Department
Mohanlal Sukhadiya University, Udaipur
Email- rinkumeena010101@gmail.com, Mobile-0000000000

First draft received: 07.02.2026, Reviewed: 09.02.2026
Final proof received: 11.02.2026, Accepted: 15.02.2026

शोध सारांश

अर्थशास्त्र के सभी पहलुओं पर एक कालातीत व व्यापक ग्रंथ है। राजनीति, कानून, अर्थव्यवस्था, युद्ध व शांति का प्रबंधन, खुफिया, विदेश नीति व कूटनीति। यह राज्य के मूल उद्देश्यों की व्याख्या करता है अर्थात् अपने लोगों के कल्याण व सुरक्षा को सुनिश्चित करना।

जटिल सुरक्षा विकास मैट्रिक्स वर्तमान में अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की अभिन्न विशेषता है। सुरक्षा व विकास दोनों आवश्यक है। वे स्वाभाविक रूप से वैश्वीकृत समाज से जुड़े हुए है। जिसमें लोग परमाणु शस्त्रागार व सुरक्षा के लिए कई पारंपरिक व गैर–पारंपरिक खतरों की छाया में है। पूर्व छै। शिवशंकर मेनन ने देखा है कि कई मायनों में आज हम जिस दुनिया का सामना कर रहे है वह उस दुनिया के समान है जिसे कौटिल्य ने महानता के लिए मौर्य साम्राज्य का निर्माण करते समय संचालित किया था।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के लिए अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता के लिए इस विश्लेषण पर प्रकाश डाला जा सकता है कि ग्रंथ की सर्वोत्कृष्टता सप्तांग के अपने तीन सिद्धांतों में परिलक्षित होती है जो राजकोष, प्रधानमंत्री, सेना सहित 7 अंगों के रूप में राज्य की शक्ति को देखता है, राजा मंडल (राज्यों का चक्र, जहां किसी का अपना देश मित्रवत व अमित्र पड़ोसियों से घिरा हुआ है) व षडगुण 6 तरीके से एक राज्य विदेश नीति का संचालन कर सकता है।

कौटिल्य ने पड़ोसी, मध्यवर्ती व दूर के राज्यों की विभिन्न श्रेणियों के साथ राज्य की निरंतर बातचीत के बारे में जो लिखा व अभ्यास किया वह अत्यधिक प्रासंगिक है। उनकी शिक्षाएं भारत के बौद्धिक डीएनए का हिस्सा है। IEDSA परियोजना में भाग लेने वाले रणनीतिक मामलों के विद्वान माइकल लिबिंग कहते है कि कौटिल्य भारत की रणनीतिक संस्कृति को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक है।

मुख्य शब्द : *सप्तांग सिद्धांत, षडगुण नीति ईस्ट और लुक वेस्ट पॉलिसी, नेबरहुड पॉलिसी, विदेश नीति, अंतर्राष्ट्रीय संबंध.*

प्रस्तावना

मौर्यकाल में चंद्रगुप्त मौर्य का प्रधानमंत्री व महान भारतीय यथार्थवादी राजनीतिक विचारक जिसे भारत का मैक्यावली भी कहा जाता है, ने अर्थशास्त्र नामक ग्रंथ लिखा। यह व्यवस्थित राजनीतिक सिद्धांत देने वाला प्रथम भारतीय ग्रंथ है। जिसमें राजनीति को धर्म से स्वायत विषय माना जाता है। कौटिल्य को नीतिशास्त्र परंपरा के विरूद्ध अर्थशास्त्र परंपरा की स्थापना का श्रेय दिया जाता है। वे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने राजनीति अर्थशास्त्र को स्वतंत्र विषय बनाया। अर्थशास्त्र राजनीतिक सिद्धांत नहीं बल्कि शासन कला पर लिखा ग्रंथ है। जिसका अर्थ है ऐसी भूमि जिस पर मनुष्य बसे हो। यह ऐसी संहिता है जो भूमि अर्जित करने व उसमें वृद्धि के उपाय सुझाती हो।

अर्थशास्त्र लोक प्रशासन, राजनीति, शासन कला, कूटनीति पर लिखा गया महान ग्रंथ है। कौटिल्य ने न केवल आंतरिक कार्य बल्कि बाह्य कार्यों में भी विस्तार से चर्चा की है। इस संबंध में वह विदेश नीति, अंतर्राष्ट्रय संबंधों व युद्ध तथा शांति के नियमों की विवेचना करता है। कूटनीति के संबंधों का विश्लेषण करने हेतु उसने मण्डल सिद्धांत प्रतिपादित किया है।

कौटिल्य ने मण्डल सिद्धांत में विभिन्न राज्यों द्वारा दूसरे राज्यों के प्रति अपनाई गई नीति का वर्णन किया। प्राचीन काल में भारत में अनेक छोटे–छोटे राज्यों का अस्तित्व था। शक्तिशाली राजा युद्ध द्वारा अपने साम्राज्य का विस्तार करते थे। राज्य बार सुरक्षा की दृष्टि से अन्य राज्यों में समझौता भी करते थे। मण्डल सिद्धांत 'शक्ति संतुलन' सिद्धांत पर आधारित है। विजिशीषु राज्य विस्तार की इच्छा रखने वाला राजा था।

कौटिल्य के अनुसार युद्ध व विजय द्वारा अपने साम्राज्य का विस्तार करने वाले राजा को अपने शत्रुओं की अपेक्षाकृत मित्रों की संख्या बढ़ानी चाहिए, ताकि शत्रुओं पर नियंत्रण रखा जा सकें। दूसरी ओर निर्बल राजाओं को शक्तिशाली पड़ोसी राज्यों के साथ मिलकर शक्तिशाली राज्यों की विस्तार नीति से बचने हेतु एक मंडल बनाना चाहिए।

कौटिल्य ने 4 मंडलों का उल्लेख किया है :–

1. प्रथम मंडल :–	इसमें स्वयं विजिशीषु, उसका मित्र व उसके मित्र का मित्र शामिल है।
2. द्वितीय मंडल :–	इस मंडल में विजिशीषु का शत्रु शामिल होता है, साथ ही विजिशीषु के शत्रु का मित्र व शत्रु के मित्र का मित्र सम्मिलित होता है।
3. तृतीय मंडल :–	इस मंडल में मध्यम, उसका मित्र व उसके मित्र का मित्र शामिल किया जाता है।
4. चतुर्थ मंडल :–	इस मंडल में उदासीन, उसका मित्र व उसके मित्र का मित्र शामिल किया जाता है।
विजिशीषु :–	ऐसा राजा जो विजय का इच्छुक है और अपने राज्य में उत्तम शासन स्थापित करता है।
अरिः–	ऐसा नृपति जिसका राज्य विजिशीषु की सीमा के साथ लगा हो अर्थात् वह विजिशीषु का स्वाभाविक शत्रु है।

मध्यम :– ऐसा नृपति जिसका राज्य विजिशीषु व उसके शत्रु दोनों की सीमाओं से लगा हो। अतः वह इनमें से किसी का भी शत्रु या मित्र हो सकता है।

उदासीन :– ऐसा नृपति जिसके राज्य की स्थिति विजिशीषु के शत्रु व मध्यम दोनों से परे हो परंतु वह इतना बलशाली हो कि संकट के समय किसी की भी सहायता या विरोध करने में समर्थ हो। इसलिए उसकी भी अनदेखी नहीं की जा सकती है।

पार्षिग्राह :– ऐसा नृपति जिसका राज्य विजिशीषु के राज्य के पीछे की ओर सीमा से लगा है। अतः वह युद्ध के समय पीछे से उपद्रव खड़ा कर सकता है। वह स्वाभाविक रूप से विजिशीषु का शत्रु होता है।

आक्रन्द :– ऐसा नृपति जिसका राज्य पार्षिग्राह के राज्य की सीमा के साथ लगी हो। अतः वह पार्षिग्राह का स्वाभाविक शत्रु होता है। विजिशीषु का स्वाभाविक मित्र होता है।

पार्षिग्राहासार :– ऐसा नृपति जिसका राज्य आक्रन्द की सीमा के साथ लगा हो। अतः वह आक्रंद का शत्रु होता है। पार्षिग्राह का परोक्ष मित्र होता है व विजिशीषु का परोक्ष शत्रु होता है।

आक्रंदासार :– ऐस नृपति जिसका राज्य पार्षिग्राहासार के राज्य के सीमा के साथ लगा हो। अतः वह पार्षिग्राहासार का स्वाभाविक शत्रु होता है। आक्रंद व विजिशीषु का परोक्ष मित्र होता है।

इन राज्यों के संयोग से चारों मंडलों के वृहद राज्यमंडल की रचना होती है। प्रत्येक मंडल में 3–3 राज्य आते है इसलिए वृहद राज्यमंडल में 12 राज्य आ जाते है। इन्हें राज्य प्रकृतियाँ कहा जाता है।

कौटिल्य का यह सिद्धांत यथार्थवाद पर आधारित है, जो युद्धों को अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की वास्तविकता मानकर संधि व समझौतों द्वारा शक्ति संतुलन बनाने पर बल देता है।

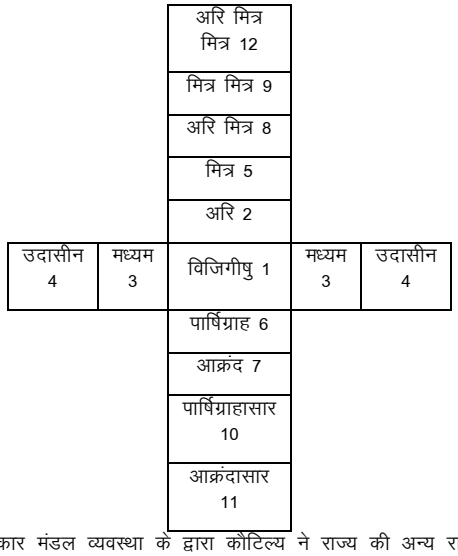

इस प्रकार मंडल व्यवस्था के द्वारा कौटिल्य ने राज्य की अन्य राजाओं के प्रति नीति व संबंधों का निर्धारण किया। जिसमें यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए मित्र व शत्रु राज्यों का विश्लेषण किया गया व पड़ोसी देशों पर विशेष बल भी दिया। मण्डल सिद्धांत में विजिगीषु को केंद्र में रखा गया है, जिसे अत्यधिक बलवान, पराक्रमी व विजयाकांक्षी बताया गया है।

कूटनीति आचरण के चार सिद्धांत

कौटिल्य ने राज्य की विदेश नीति के संदर्भ में कूटनीति क सिद्धांत का प्रयोग किया है।

1. साम :– शांति या समझा बुझाकर काम निकालना।
2. दाम :– धन देकर राज्यों पर नियंत्रण करना व अपने पक्ष में करना।
3. दण्ड :– किसी राज्य के विरूद्ध बल प्रयोग या आक्रमण करना।
4. भेद :– मित्र राज्यों या दूसरे राज्यों में फूट डालना।

कौटिल्य ने साम, दाम को विजिगीषु को अशक्त राजा क विरूद्ध व भेद, दण्ड का प्रयोग विजिगीषु राजा को शक्तिशाली राजा या राज्य के विरूद्ध करना चाहिए या उसने प्राथमिकता के रूप में दण्ड को अंतिम प्राथमिकता प्रदान की। इसके अनुसार साम, दाम, दण्ड, भेद की नीतियों का प्रयोग करना चाहिए।

इस व्यवस्था के अंतर्गत मध्यम, उदासीन राज्यों को छोड़कर सभी प्रकार की राज्य की शक्ति को कमोवेश एक ही स्थिति में रखा गया है।

इस सिद्धांत के अवलोकन में यह संकेत मिलता है कि मंडल के अंतर्गत राज्य की संख्या व स्थिति में समयानुसार परिवर्तन किया जा सकता है।

मध्यम, उदासीन राज्य का चित्रण कर कौटिल्य ने राज्यों के बीच शक्ति संतुलन की व्यवस्था को चित्रण किया।

कौटिल्य के अनुसार भौगोलिक रूप में परस्पर राज्य एक दूसरे के शत्रु होंगे।

मण्डल सिद्धांत के अंतर्गत राज्य की विभिन्न प्रकृति का चित्रण किया गया है व कौटिल्य विग्रह व युद्ध दोनों पर बल दिया है। विजिगीषु राजा को परामर्श दिया कि किन परिस्थितियों में आक्रमण व संधि करना चाहिए।

लोगों के जीवन में महापुरूषों के विचारों का काफी प्रभाव होता है। चाणक्य के विचारों ने भी लोगों व देशों के जीवन को उन्नत किया है। चाणक्य की कूटनीति व इसके सिद्धांतों का उल्लेख किया है। कौटिल्य के विचार अध्यापक, राजनीतिज्ञ व व्यावसायिक के साथ गौरवशाली व्यक्तित्व के बारे में पढ़ने से नई ऊर्जा का संचार देता है।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र की समझ के बिना प्राचीन भारतीय राजनीतिक सिद्धांत का अध्ययन अपर्याप्त है। भारतीय वैदिक सभ्यता में अर्थशास्त्र राजीति विज्ञान में सबसे सम्मोहक व संपूर्ण ग्रंथों में से एक है। प्राचीन भारत में कौटिल्य ने राजनीति को वैज्ञानिक अनुशासन में बदल दिया व वैज्ञानिक सिद्धांतों व वास्तविक साक्ष्यों का उपयोग करके राजनीतिक सिद्धांतों का मूल्यांकन करने का प्रयास किया। कई लोग कौटिल्य को विश्व का प्रथम राजनीतिक यथार्थवादी मानते है।

317–293 ई.पू. तक कौटिल्य ने चंद्रगुप्त मौर्य के राज्य मंत्री के रूप में कार्य किया। अर्थशास्त्र में उन्होने राज्य, युद्ध, सामाजिक संरचनाओं, कूटनीति, नैतिकता, राजनीति व शासन कला पर अपने विचार पूरी तरह से व्यक्त किए। मौर्य साम्राज्य ब्रिटिश भारत से भी बड़ा था जो हिन्द महासागर से लेकर हिमालय व पश्चिम में ईरान तक फैला था। सिकंदर के जाने के बाद मगध भारत का सबसे शक्तिशाली साम्राज्य था व कौटिल्य एक मंत्री था जो सम्राट को सलाह देता है। चाणक्य को कौटिल्य या विष्णुगुप्त के नाम से भी जाना जाता है।

मण्डल सिद्धांत प्राचीन भारतीय शासन कला में अंतर्राज्यीय संबंध सिद्धांत का महत्वपूपर्ण विचारों में से एक था। जो बताता है कि विजेता के संबंध में एक राज्य अपनी भौगोलिक स्थिति के आधार पर सहयोगी या प्रतिद्वंद्वी होता है। इसकी उत्पति के साक्ष्य विश्वसनीय नहीं मिले। वैदिक या ब्राह्मण साहित्य में इसका उल्लेख नहीं है। लेकिन मनुस्मृति व महाभारत में व्यापक चर्चा है इसकी।

कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में मंडल विचार व राज्य की सुरक्षा व अस्तित्व के लिए इसकी प्रासंगिकता का कहीं अधिक गहन चित्रण किया है। कौटिल्य के अंतर्राज्यीय संबंध के विचार को इस हद तक परिष्कृत किया गया था कि इसे सभी युगों में इस्तेमाल किया जा सकता है, अपने समय की आवश्यकता के अनुसार स्पष्ट व यथार्थवादी रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है।

कौटिल्य का मण्डल सिद्धांत इसी सिद्धांत पर आधारित था और कौटिल्य की रचनाएं पढ़ते समय सबसे पहली चीज जो दिमाग में आती है वह यही है। कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में सैद्धांतिक राज्य निर्माण के रूप में मंडल प्रणाली का निर्माण किया। कौटिल्य ने राज्य विदेशी संबंधों की व्याख्या व विश्लेषण करते हुए मंडल सिद्धांत का प्रतिपादन किया। यदि कोई राजा दूसरी राज्यों से लड़कर व विजय प्राप्त करके अपने राज्य का विस्तार करना चाहता है तो उसे अपने शत्रु राज्यों की संख्या के अनुपात में अपने मित्रों की संख्या बढ़ानी चाहिए ताकि उन्हें अपने प्रभावी प्रभाव क्षेत्र के अंदर रखा जा सकें। दूसरी ओर कमजोर राज्यों के अपने शक्तिशाली पड़ोसियों से सावधान रहना चाहिए। उन्हें समान दर्जे वाले देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने चाहिए व विस्तारवादी नीतियों का पालना करने वाली महाशक्तियों के खिलाफ खुद को बचाने के लिए ऐसे राज्यों का एक मंडल बनाना चाहिए।

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति संरचना का सबसे प्रारंभिक मॉडल मण्डल सिद्धांत था। यह लगभग 2000 साल पहले लिखा गया था। इसमें उच्च स्तर की जटिलता है। कौटिल्य की अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली का सार्वभौमिक सेट, साथ ही 4 मंडलों (राज्यमंडल) संरचनात्मक घटकों व उपसम्मुचयों की सीमाए, सभी को स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट किया गया है। कौटिल्य ने मंडल प्रणाली में पड़ोसियों के साथ बातचीत के लिए छः गुना नीति का प्रस्ताव रखा, जिसमें सह अस्तित्व, तटस्थता, गठबंधन, दोहरी नीति, मार्च व युद्ध शामिल थे। उन्होंने सम्राट से इसे पूरा करने के लिए 5 रणनीतियों में से एक का उपयोग करने

का आग्रह किया, सुलह, उपहार, रिश्वतखोरी, असहमति, धोखे व दिखावा, सीधा हमला या युद्ध।

परिणामस्वरूप जब संधियों व गठबंधनों की बात आती है तो वह सलाह देते है, 'एक राजा को किसी भी मित्रता या संबद्धता को तोड़ने में संकोच नहीं करना चाहिए जो बाद में नुकसान देह साबित हो।' क्योंकि कौटिल्य शक्ति व ताकत में विश्वास करते है, मंडल सिद्धांत वैश्विक विजय के लक्ष्य के साथ अभियान की योजना, डिजाइन है। वह कहते है ''शक्ति ताकत का कब्जा है। ''कौटिल्य का सिद्धांत भावनात्मक विचारों पर आधारित नहीं है बल्कि देश की सुरक्षा के लिए सभी संभावित खतरों का आकलन करने में तर्क पर आधारित है। उन्होने टिप्पणी की है, ''एक राजा जो कूटनीति के वास्तविक निहितार्थों को जानता है वह पूरी दुनिया पर विजय प्राप्त करता है।''

प्राकृतिक प्रतिकूलताओं का मतलब यह नहीं है कि हम उनके साथ लगातार युद्ध की स्थिति में है, लेकिन अलर्ट मोड पर अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का संचालन चिंता का कारण है।

कौटिल्य की विदेश नीति के आवश्यक तत्व – जैसे सत्ता के लिए लड़ाई, राष्ट्रीय हित, गठबंधन, शत्रुता व कूटनीति, समय के अंत व अपरिवर्तित रहते है। कौटिल्य की विदेश नीति आज भी अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्र में लागू होती है।

परिणामस्वरूप वह ट्रांस आधुनिक वैश्विक सभ्यता के दौर में अभी भी प्रांसगिक है। इसके अलावा प्राचीन भारतीय राजनीतिक दर्शन को समझने के लिए अंतर–राज्यीय संबंधों की गहन समझ की आवश्यकता होती है, जिसमें कौटिल्य का योजदान आता है।

वर्तमान विदेश नीति (जिसे मोदी सरकार की विदेश नीति या मोदी सिद्धांत भी कहते है।) विदेश मंत्री सुब्रह्मण्यम जयशंकर की अध्यक्षता वाला विदेश मंत्रालय भारत की विदेश नीति को क्रियांवित करने के लिए जिम्मेदार है। मोदीजी की विदेश नीति दक्षिण एशिया में पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को बेहतर बनाने, दक्षिण पूर्व एशिया के साथ विस्तारित पड़ोस व प्रमुख्य वैश्विक शक्तियों को शामिल करने पर केंद्रित है।

उन्होने चीन की संभावित आक्रामता का आह्वान किया व बांग्लादेश से अवैध आप्रवासन पर ध्यान केंद्रित किया। चीन के साथ व्यापार व अन्य भू–राजनीतिक पहलों की तुलना में व्यापार सौदों पर अधिक ध्यान केंद्रित किया।

निकटतम पड़ोसियों के साथ संबंधों में सुधार करना उनकी प्राथमिकता व उनके विकास एजेंडे को साकार करने के लिए दक्षिण एशिया में शांति आवश्यक थी।

चीन, रूस, फ्रांस, USA, ब्रिटेन सभी देशों से सामंजस्य व संतुलन का सिद्धांत अपनाया।

वर्तमान विदेश नीति पर कौटिल्य की परराष्ट्र नीति का प्रभाव

कौटिल्य का अर्थशास्त्र सामरिक प्रबंधन का एक शास्त्रीय ग्रंथ है और इसे आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के लिए आधारभूत पाठ माना जा सकता ई। पश्चिमी समाजवादी मैक्स वेबर अर्थशास्त्र के महत्व व वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता को पहचानने और वाले पहले लोगों में से थे, जब उन्होने हिंदू धर्म पर धार्मिक अध्ययन किया। मोदी के विश्वदृष्टि में अपने पूर्ववतियों की तुलना में अधिक साहसी भारत का स्थान पहले से कही अधिक बड़ा है। इसके अनुरूप प्रधानमंत्री की विदेश नीति ज्ञान और लोगों के बडे कारण से सूचित शक्ति के व्यावहारिक व बुद्धिमान उपयोग पर अर्थशास्त्र के जोर को दर्शाती है।

नरेंद्र मोदी सरकार की विदेश नीति को मोदी सिद्धांत भी कहते है। 26 मई 2014 को सत्ता में आने के तुरंत बाद से ही मोदी सरकार ने अन्य देशों के साथ संबंधों को नया आयाम देने की दिशा में कार्य करना आरंभ कर दिया।

दक्षिण एशिया के अपने पड़ोसियों से संबंध सुधारना मोदी की विदेश नीति के केंद्र में है। इसके लिए उन्होने 100 दिन के अंदर ही भूटान, नेपाल, जापान की यात्रा की। इसके बाद अमेरिका, म्यांमार, आस्ट्रेलिया व फिजी की यात्रा की।

नरेंद्र मोदी ने विश्व के बारे में भारत की सोच में आमूल परिवर्तन कर दिया है। न केवल पश्चिमी विद्वान बल्कि आधुनिक शिक्षा पर पोषित भारतीय विशेषज्ञ भी नरेंद्र मोदी की विदेश नीति का मूल्यांकन करने के लिए 2300 साल पहले लिखे गए अर्थशास्त्र का उपयोग करने से कतरा सकते है। अपनी धारण पर पुनर्विचार करना चाहिए।

अर्थशास्त्र के लेखक व सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के गुरू कौटिल्य के अध्ययन में रूचि और उनकी समकालीन प्रासंगिकता की सराहना मोदी सरकार से पहले की है।

पूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार व विदेश सचिव शिवशंकर मेनन के समर्थन से 2012 के बाद से एक प्रमुख भारतीय थिंक टैंक इंस्टीट्यूट ऑफ डिफेंस स्टडीज एंड एनालिसिस द्वारा अध्ययन किए गए है। हाल ही में हेनरी किसिंजर ने अर्थशास्त्र को शासकों के लिए एक व्यावहारिक गाइड टू एक्शन के रूप में चित्रित किया है। इसके मौलिक महत्व को रेखांकित किया है।

- पाकिस्तान पर हमला किया (2019 में पुलवामा हमले के बाद व बालाकोट हवाई हमले प्रमुख उदाहरण है।)
- 2014 में लुक ईस्ट पॉलिसी की जगह एक्ट ईस्ट पॉलिसी अपनाया। रणनीतिक सहयोग व साझेदारी व सुरक्षा बनाने हेतु आसियान व अन्य पूर्वी एशियाई देशों के साथ संबंधों को बेहतर बनाने पर ध्यान केंद्रित किया।
- ''नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी'' निकटतम पड़ोसी देशों के साथ संबंध बेहतर करने हेतु ध्यान केंद्रित किया गया।
- हिंद महासागरीय आउटरीच (2015) :– हिंद महासागर में रणनीतिक रूप से स्थित द्वीपसमूहों पर बढ़ती चीनी रणनीतिक उपस्थिति के कारण भारत आर्थिक व सुरक्षा सहयोग बढ़ाने का प्रस्ताव शुरू किया।
- प्रोजेक्ट मौसम :– हिंद महासागर में बढ़ती चीनी नौसैनिक गतिविधि के मद्देनजर इसकी शुरूआत की है। जिसे चीनी समुद्री सिल्क रोड पहल का प्रतिद्वंद्वी माना जाता है।
- प्रशांत द्वीप समूह के साथ सहयोग :– स्वच्छ ऊर्जा के साथ–साथ जलवायु परिवर्तन को अनुकूलित करने के लिए बिलियन डॉलर का विशेष कोष स्थापित किया।
- फास्ट ट्रैक डिप्लोमेसी :– सक्रिय, मजबूत व संवेदनशीलता के साथ सार्क क्षेत्र, आसियान क्षेत्र व मध्य पूर्व में सभी भारतीय मिशन प्रमुखों के साथ आदान–प्रदान किए।
- पैरा डिप्लोमेसी :– मोदी सरकार के अभिनव विचारों में से एक है, जहाँ प्रत्येक राज्य व शहरों को किसी अन्य देश के देशों या उनके हित के शहरों के साथ विशेष संबंध बनाने के लिए प्रोत्साहित करना। जैसे – चीन राष्ट्रपति द्वारा मुंबई, शंघाई, अहमदाबाद व गुआंगचौ के बीच एक समान सिस्टर स्टेट्स समझौते पर हस्ताक्षर करने की संभावना की है।
- दक्षिण चीन सागर विवाद – भारत के लिए भू–राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्र है, एक्ट ईस्ट विदेश नीति पहल के हिस्से के रूप में भारत–प्रशांत में एक स्थिर शक्ति के रूप में कार्य करें।
- दक्षिण एशिया नीति, पश्चिमी एशिया नीति (मध्य पूर्व के देशों से आर्थिक संबंध सुधारने, लिंक पश्चिम नीति पश्चिमी पड़ोसियों विशेषकर खाड़ी देशों के साथ संबंधों को मजबूत करने के प्रयास में)
- ISJS के खिलाफ गैर–कानूनी गतिविधियों (रोकथाम) एक्ट के तहत इस आतंकवादी संगठन को प्रतिबंधित कर दिया।
- 2014 इजरायल–हमास संघर्ष :– भारत ने इजरायल के साथ अच्छे संबंध बनाए रखते हुए फिलीस्तीनी मुद्दे का पूरा समर्थन करते है। दोनों के साथ मित्रतापूर्ण संबंध है।
- इंडो पैसेफिक पॉलिसी, साइबर सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण में सहयोग, यूरोपीय राष्ट्रों के साथ मेक इन इंडिया आत्मनिर्भर भारत अभियान आदि को मजबूत व आर्थिक विकास करने का प्रयास किया गया।
- SCO, G-20, BRICS, राष्ट्रमंडल देशों, पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन, WTO, UNO, बिम्सटेक, मेकांग गंगा सहयोग आदि के माध्यम से अन्य देशों के साथ संबंध सुधारने का प्रयास किया।

कौटिल्य की छः सूत्रीय विदेश नीति

अपनी नीति तो अपनाओ, लेकिन शत्रु की युद्ध नीति को समझना भी उतना ही आवश्यक है। युद्ध में अपने शत्रु की भाँति सोचना भी आवश्यक है। जो भी नीति हो, उसे गुप्त रखो। उसे केवल अपने विश्वासपात्र सहयोगियों को बताआ। अच्छे के लिए सोचो पर बुरे से बुरे के लिउ भी उद्यत रहों। (चाणक्य)

जिसके आदर्श व्यावहारिक, राजनीतिक, कूटनीतिक चिंतन का मानता है व उसके कालजयी राजनीतिक व कूटनीतिक सूत्र हमारा आज भी मार्गदर्शन कर रहे है व भविष्य में भी करते रहेंगे। चाणक्य में हमें परामर्श दिया है कि शत्रु को जहाँ से भी आर्थिक, सामाजिक, मानसिक व शारीरिक शक्ति प्राप्त हो रही है, उस स्रोत को शत्रु तक पहुँचने से पहले ही मिटा दो। सही समय की प्रतीक्षा करों। जब शत्रु पूर्णरूपेण दुर्बल हो तब उस पर मिलकर आक्रमण कर दो। इस प्रकार के हमले के बाद शत्रु पूर्णतः अचंभित हो जाएगा व आपसे प्रतिशोध लेने में भी सक्षम नहीं होगा।

संधि :–शांति बनाए रखने हेतु समतुल्य या अधिक शक्तिशाली राजा के साथ संधि की जा सकती है। आत्मरक्षा की दृष्टि से शत्रु से भी संधि की जा

सकती है। किंतु इसका लक्ष्य शत्रु को कालान्तर में निर्बल बनाना है। भारतीय चिंतन व परंपरा में शत्रु वह है जो हमारे राष्ट्रीय अस्तित्व को समाप्त करने के करने के षड्यंत्रों में या किसी भी प्रकार से मानवीय मूल्यों का हनन करने व मानवता का विनाश करने की योजनाओं में संलिप्त रहता है। संधि करने से अभिप्राय केवल इतना है कि देश, काल व परिस्थिति के अनुसार यदि कुछ समय के लिए शक्तिशाली राजा को या देश को इस भ्रम में डाला जा सकता है कि हम उससे संधि करना ही अपने लाभकारी मानते है तो ऐसा कर लिया जाना चाहिए। समय आने पर अपनी शक्ति को बढ़ाना चाहिए व फिर उसकी दानवता का प्रतिकार करना चाहिए।

विग्रह या शत्रु के विरूद्ध युद्ध का निर्माण :– जब कोई शत्रु देश हमारे आंतरिक मामलें में हस्तक्षेप करने लगता है और हमारी आंतरिक शांति को भंग करने का प्रयास करने लगता है तब उसके विरूद्ध युद्ध की घोषणा करना अनिवार्य हो जाता है, शत्रु हमारी सीमाओं को तोड़कर राष्ट्रीय एकता व अखण्डता को चुनौती देता है।

यान या युद्ध घोषित किए बिना आक्रमण की तैयारी :– शत्रु को अपने प्रति सदा संशय में डाले रखना चाहिए। उसे हमारे राष्ट्र की किसी भी दुर्बलता का ज्ञान नहीं होना चाहिए। मनोवैज्ञानिक दबाव उस पर बना रहना चाहिए। यदि उसके समक्ष हमने अपनी दुर्बलताओं को दिखाने का तनिक सा भी प्रयास किया तो परिणाम वही होगा जो 1962 में चीन ने हमारे साथ किया था। उस समय भारत के प्रधानमंत्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने चीन की शत्रुतापर्ण साम्राज्यवादी व विस्तारवादी नीतियों के प्रति असावधानी बरतकर उसे अपनी अहिंसात्मक रक्षा नीति की दुर्बलता बता दी थी। जिसका परिणाम यह हुआ कि चीन ने भारत पर हमला किया व उस समय हमें अपनी राष्ट्रीय नेतृत्व द्वारा बरती गई असावधानी का भारी मूल्य चुकाना पड़ा।

संश्रय अर्थात् आत्मरक्षा की दृष्टि से राजा द्वारा अन्य राजा की शरण में जाना – अपनी राष्ट्रीय एकता व अखण्डता को बचाए व बनाए रखने के लिए ऐसा किया जाना नैतिक रूप से उचित माना जाता है। जैसा हम वर्तमान समय में देख रहे है, जब चीन अपने सैनिकों को हमारी सीमा पर भेज रहा है और सीमा पर युद्ध की संभावना प्रबल होती जा रही है। ऐसे में भारत की विदेश नीति चाणक्य के इसी सूत्र का लाभ उठाते हुए संसार में अपने मित्रों की खोज कर रही है। इसे चाणक्य की सफलता ही मानना चाहिए कि जितनी बड़ी संख्या में वैश्विक शक्तियाँ भारत का सामरिक सहयोग करने की तैयारी कर रही है, उतने ही अनुपात में चीन हमारी ओर बढ़ने में भय अनुभव कर रहा है। पिछले दिनों चीन के द्वारा कुछ सैनिक भारत की सीमाओं पर तैनाती के लिए जब गाड़ियों में लादकर भेजें गए तो गाड़ियों में बैठे हुए चीनी सैनिक भारत के भय के कारण रो रहे थे, क्योंकि उन्हें यह आभास हो रहा था कि आज का भारत 1962 का भारत नहीं है, आज के भारत के साथ वैश्विक शक्तियाँ जुड़ती जा रही है और यदि इस बार युद्ध हुआ तो चीन को युद्ध का भारी मूल्य चुकाना पड़ सकता है। यही कारण है कि चीन के सैनिकों को ऐसा आभास हो रहा है कि हम संभवतः इस युद्ध में मारे जायेंगे।

द्वेधीभाव अर्थात् एक राजा में शांति की संधि करके अन्य के साथ युद्ध करने की नीति – इस नीति को रूस के संबंधों के माध्यम से समझ सकते है। भारत के प्रति मित्रतापूर्ण दृष्टिकोण सारा संसार जानता है। भारत रूस की सामरिक संधि के चलते भारत को कभी भी किसी प्रकार का खतरा नहीं रहा है। रूस ने अपनी मित्रता को न केवल भारत रूस द्विपक्षीय संबंधों के विषय में निभाया है, बल्कि उसने सयुक्त राष्ट्र जैसे वैश्विक मंचों पर भी भारत का साथ देकर अपनी सच्ची मित्रता का प्रमाण प्रस्तुत किया है। भारत ने रूस से सामरिक संधि करके भारत ने चीन को यह संदेश दिया है कि वह अपनी क्षेत्रीय अखण्डता को बनाए रखने के लिए उससे युद्ध करने को तैयार है। भारत रूस की मित्रता व सामरिक संधि को समझकर चीन भी भारत पर हमला करने से पहले 10 बार सोचेगा। भारत इस समय चीन से युद्ध करने के लिए तैयार है, क्योंकि वह जानता है कि चीन इस समय अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर अपने आपको अकेला अनुभव कर रहा है।

भारत कौटिल्य की नीति के इसी सूत्र को अपनाकर वैश्विक शक्तियों के साथ सामंजस्य स्थापित कर चीन से 1962 का बदला लेने के लिए तैयार है। अंतर्राष्ट्रीय शांति बनाए रखने के अपने दायित्व का निर्वहन करने के दृष्टिगत भारत अभी भी इसी प्रतीक्षा में है कि चीन ही युद्ध का आरम्भ करें तो अच्छा रहेगा।

दुर्बल देशों के राजनीतिज्ञों को चाहिए कि वे अपने पड़ोसी सबल देशों से किसी भी प्रकार मित्रतापूर्ण संबंध बनाए रखें। यदि छोटे देश अपने पड़ोसी सबल राष्ट्र को तोड़ने की या उसे किसी भी प्रकार से आहत करने की चेष्टा में सम्मिलित होंगे वर्तमान संदर्भ में हम नेपाल को देख सकते है। नेपाल हमारा बहुत पुरान पड़ोसी देश है, परन्तु वर्तमान में वह चीन के हाथों खेल रहा है। अब चीन जैसे पड़ोसी व साम्राज्यवादी देश के हाथों में खेलकर वह अपनी स्वयं की ही हानि कर रहा है।

हमारी एकता व अखण्डता को छिन्न–भिन्न करने की योजना में सम्मिलित है तो ऐसे उत्पाति पड़ोसी शत्रु देश पर हमला करने की योजना में सम्मिलित है तो पड़ोसी शत्रु देश के प्रति सबल राष्ट्र को भेद के माध्यम से भी उचित मार्ग पर लाने का अधिकार है। यदि आज कौटिल्य होते तो वे पाकिस्तान जैसे देश को युद्ध के माध्यम से दंडित करने की नीति अपनाते क्योंकि पाकिस्तान भारत की एकता व अखण्डता के लिए पहले दिन से एक खतरा बना हुआ है। भारत का नेतृत्व पाकिस्तान को 'छोटे भाई' कहकर क्षमा करने की आत्मघाती नीति का पालन करता रहा है। चाणक्य के रहते ऐसी नीति को प्राथमिकता न देकर शत्रु देश पाकिस्तान को दण्ड व भेद के माध्यम से सही मार्ग पर लाने का प्रबंध किया जाता।

विदेश नीति को सफल बनाने के लिए गुप्तचर व्यवस्था का शक्तिशाली होना भी बहुत आवश्यक है। इस संबंध में कौटिल्य का विचार है कि कौटिल्य ने गुप्तचरों के प्रकारों व कार्यों का विस्तार से वर्णन किया है। गुप्तचर विद्यार्थी, गृहपति, तपस्वी, व्यापारी व विष–कन्याओं के रूप में हो सकते है। इनका कार्य देश–विदेश की गुप्त सूचनाएं राजा तक पहुँचाना होता था। ये जनमत की स्थिति का आकलन करने, विद्रोहियों पर नियंत्रण रखन, शत्रु राज्य को नष्ट करने में योगदान देते थे। गुप्तचरों को राजा द्वारा धन व मान सम्मान देकर संतुष्ट रखने का सुझाव दिया है।

कौटिल्य के अनुसार विदेश नीति का मापदंड यह है कि क्या उससे किसी राज्यसत्ता को गर्त में जाने, यथास्थिति व विकास के रास्ते पर आगे बढ़ने से जुड़े चक्र में ऊपर उठने में मदद मिलती है। विदेश नीति का लक्ष्य भौगोलिक सीमाओं की सुरक्षा के साथ–साथ आर्थिक समृद्धि प्रदान करना भी है। भारतीय विदेश नीति के उद्देश्यों की प्राप्ति में पाकिस्तान व चीन की संभावित भूमिका के हिसाब से ही उनके प्रति भारत का रवैया परिभाषित करना चाहिए।

इससे भारत के राष्ट्रीय हितों में स्पष्टता लाने में आसानी होगी, साथ ही वैश्विक स्वभाव वाली व आपस में जुड़ी विश्व व्यवस्था में भारतीय विदेश नीति के लक्ष्य योगक्षेम (सुरक्षा व कल्याण) को परिभाषित करने में भी मदद मिलेगी, शांगरी–ला डायलॉग में अपने मुख्य संबोधन में नरेन्द्र मोदी ने भारत की भावी आर्थिक संभावनाओं को न सिर्फ देश की अर्थव्यवस्था के आकार बल्कि वैश्विक मसलों में भारत के जुड़ाव की गई से भी जोड़ा, आधुनिक समय में मंडला की राजसताएं ''आपस में जुड़ाव वाले हो गए है, ऐसे में तो किसी एक राजनीतिक इकाई में राजकीय कर्तव्यों को दूसरी राजसता के लोगों की खुशियों के साथ जोड़ देते है।'' भारत नियम आधारित विश्व व्यवस्था को बढ़ावा देने का पक्षधर है, ऐसी कल्पनाशीलता सुरक्षा व समृद्धि के दोहरे मकसद को लक्ष्य बनाती है।

भारत की सामरिक व रणनीतिक गणनाओं को इसी संदर्भ में देखे जाने की जरूरत है, चीन एक क्षेत्रीय महाशक्ति है, विश्व की आर्थिक व्यवस्था में उसका दर्जा काफी ऊंचा है, भारत रणनीतियों में उसकी अहमियत अस्थिरता भरे पाकिस्तान के मुकाबले कही ज्यादा है। वैश्विक मंच पर भारत अपने लिए महाशक्ति वाली भूमिका तलाश रहा है। भारत की आर्थिक समृद्धि के लिए एक स्थिर व शांत पड़ोस बहुत जरूरी है, ऐसे में पाकिस्तान के साथ रिश्तों पर भी ध्यान दिए जाने की जरूरत है, भारत के नजरिये से देखे तो एक निष्क्रिय पाकिस्तान ही पर्याप्त है। जबकि चीन के साथ सकारात्मक व उत्पादकता से भरा संबंध वक्त की मांग व बेहद जरूरी है। चीन विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, ऐसे में तो एक ऐसा किरदार है जिसे नजरअंदान नहीं किया जा सकता, जबकि इस पायदान में पाकिस्तान का स्थान 44वां है।

मोदी सरकार के उदय ने भारत के अधिक आत्मविश्वास को दर्शाया है। विदेश सचिव एस. जयशंकर ने जोर देकर कहा कि विदेश नीति का आयाम केवल संतुलन शक्ति के बजाय प्रमुख शक्ति बनने की आकांक्षा है। यह विजिगीषु होने के करीब है, जैसा अर्थशास्त्र में चित्रित है, प्रमुख शक्ति बनने की महत्वाकांक्षा कौटिल्य की अवधारणा के सार्वभौमिक नेता होने के आवेग को दर्शाती है। ऐसा लगता है मोदी व उनके आदर्श सलाहकारों ने अर्थशास्त्र मूल संदेश को आत्मसात कर लिया है। शासक को शक्ति का ज्ञानपूर्वक उपयोग करना चाहिए क्योंकि ज्ञान शक्ति व धन से अधिक मूल्यवान है।

निष्कर्ष

कौटिल्य राजनीतिक यथार्थवाद, विदेश नीति व नैतिक भ्रम के बिना सत्ता हासिल करने व बनाए रखने की कला के आदर्श समर्थक है। राष्ट्रीय शक्ति, राष्ट्रीय हित पर उनके तर्क बौद्धिक व व्यावहारिक दोनों है। मंडल सिद्धांत के माध्यम से उन्होने विश्व विजय के लक्ष्य व उन तरीकों की स्थापना की जिनका उपयोग एक धनी राज्य द्वाा किया जाना चाहिए। साथ ही उन्होने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की क्रूर वास्तविकता पर चर्चा की। उन्होने सत्ता व प्रभुत्व हासिल करने के लिए व्यवस्थित तरीकों की रूपरेखा तैयार की व उनका दावा है कि अंतर्राष्ट्रीय राजनीति इस उद्देश्य के लिए शक्तिशाली व कमजोर सरकारों गैर कानूनी लड़ाई है।

कौटिल्य को वैभव या प्रतिष्ठा से कोई रूचि नहीं थी, इस विचार में विश्वास करते थे कि अंत (साध्य) साधन को उचित ठहराता है। उनकी भू–रणनीतिक अंतर्दृष्टि प्रकृति में अविश्वसनीय रूप से परिष्कृत है और यह आज भी लागू है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. प्राचीन व मध्यकालीन भारत का राजनीतिक चिंतन – प्रमुख परंपराए व चिंतक, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2015

2. अवस्थी डॉ. ए एस अवस्थी, भारतीय राजनीतिक चिंतक, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर, 2015

3. सुनील खिलनानी, इनकारनेशन्स – अ हिस्ट्री ऑफ इंडिया इन 50 लाइव्स, मंजुल पब्लिकेशन हाउस, भोपाल, 2019

4. चतुर्वेदी, प्रो. मधुकर श्याम, प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक, कॉलेज बुक हाउस, 2009

5. जैन, डॉ. पुखराज, प्रतिनिधि भारतीय राजनीतिक विचारक, साहित्य भवन पब्लिकेशंस, आगरा, 2014

6. सिंह, उपेन्द्र, भारतीय राजनीतिक विचारक, ग्रंथ विकास, जयपुर, 2009

7. गावा, ओम प्रकाश, भारतीय राजनीतिक विचारक, मयुर पेपर वैक्स, नोएडा, 2019

8. बंधोपाध्याय, एन.सी., डेवलपमेंट ऑफ हिन्दू पॉलिटी एण्ड पॉलिटिकल थ्योरी, ओरिएंटल, कलकता, 1989

9. जायसवाल, के. पी. हिन्दू पॉलिटी, चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, 2005

10. बंधोपाध्याय, एन.सी., डेवलपमेंट ऑफ हिन्दू पॉलिटी एण्ड पॉलिटिकल थ्योरी, ओरिएंटल, कलकता, 1981

11. भण्डारकर, डी. आर., सम आस्पैक्ट्स ऑफ एंशियेन्ट हिन्दू पॉलिटी, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, बनारस, 1969

12. प्रसाद, बेनी, थ्योरी ऑफ गवर्नमेंट इन एंशिएंट इंडिया, सेन्ट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद, 1974

13. मेहता, वी. आर., भारतीय राजनीतिक चिंतक के आधार, एक व्याख्या (मनु से आज तक), मनोहर, नई दिल्ली, 2007

14. पाठक, रश्मि, भारतीय राजनीतिक विचारक, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, 2004

15. भगवान, डॉ. विष्णु, भारतीय राजनीतिक विचारक, आत्माराम एडसंस, दिल्ली, 2000

16. शिवशंकर मेनन 2010 से 2014 तक राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार व 2006 से 2009 तक विदेश सचिव रहें।

17. कौटिल्य का अर्थशास्त्र, आईडीएसए में पता, 8 अक्टूबर, 2013

18. ए अप्पादोराई : The Domestic root of India's foreign policy

19. ए अप्पादोराई व एम. एस. मेनन : India's foreign policy and relations

20. एम. एस. राजन : Studies in India's foreign policy

21. आर. एस. यादव : भारत की विदेश नीति

22. प्रेमलता शर्मा : India's foreign policy

23. के. के. पाठक : Nuclear policy of India

24. बोशे, रोजर (2002) द फर्स्ट ग्रेट पोलिटिकल रिएलिस्ट : कौटिल्य एंड हिज अर्थशास्त्र

25. मित्रा, सुब्रत के एंड माइकल लिबिंग (2017) कौटिल्याज अर्थशास्त्र – ऐन इंटलेक्चुअल पोरट्रेट नई दिल्ली : रूपा पब्लिशिंग इंडिया प्राइवेट लिमिटेड